पँखुरियाँ गुलाब की

गुलाब खंडेलवाल

अर्चना प्रकाशन

प्रकाशक :
अचना,
५५, जमनालाल बजाज स्ट्रीट
कलकत्ता-७

मूल्य १०)

मुद्रक आकार प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

ये कुल ग़ज़लें, दो ग़ज़लों को छोड़कर, सन् १९७४ और सन् १९७७ के बीच लिखी गयी हैं। 'सौ गुलाब खिले' के बाद पुन मैंने इसी विधा में लिखने की ज़रूरत क्या समझी, यह इनको पढ़कर ही समझा जा सकेगा। मैं तो केवल इतना कह सकता हूँ कि इनमें मात्र संख्या का ही नहीं, गुणों का भी विस्तार है।

ये ग़ज़लें बहु-आयामी हैं। इनमें मेरी आत्माभिव्यक्ति ही नहीं, आत्म-समर्पण भी है। 'सौ गुलाब खिले' की समस्त विशेषताओं को कायम रखते हुए मैंने इनमें चेतना के नये छोरों को छूने का प्रयास किया है।

हिंदी और उर्दू, साहित्य और संगीत तथा सामान्य सहृदय और साहित्य-मर्मज्ञ के बीच की खाई को पाटने का प्रयास मैंने 'सौ गुलाब खिले' में किया था। प्रस्तुत रचना द्वारा लौकिक और आध्यात्मिक प्रेम को एक साथ अभिव्यक्त करने की चेष्टा की गयी है। कवियों के लिये यह मार्ग नया नहीं है। तुलसी और कबीर जैसे महान कवियों ने भी अपने-अपने ढंग से यह कार्य किया है। पिछले चार वर्षों से फ़रहाद की तरह प्रेम की इस नहर को काटने में मुझे जितना आनंद मिला है, यदि इन ग़ज़लों को पढ़कर, सुनकर और गाकर उसका एक अंश भी आपको मिल सका तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूँगा।

इन पँखुरियों को आज मैं काल के दुर्धर्ष रथ के पहियों के नीचे बिछा रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि सतत कुचली जाने पर और झंझा द्वारा दिग-दिगंत में उड़ायी जाने पर भी ये अपनी ताज़गी और ख़ुशबू बनाये रख सकेंगी।

हो सकता है कभी कोई रसज्ञ इनका समुचित मूल्यांकन कर सके, इन्हें साहित्य में इनका उपयुक्त स्थान दिला सके। हो सकता है, वह सब देखने को मैं नहीं रहूँ। आज तो मैं इतने से ही सन्तोष कर लूँगा कि कोई भावुक प्रेमी अपनी प्रेमिका के सिरहाने इन्हें रख दे या कोई भक्त अपने भगवान के चरणों पर इन्हें चढ़ा दे।

ग़ज़ल संख्या १०६ और १०४ क्रमश १९५७ और १९६७ में उर्दू मुशायरों के लिये लिखी गयी थीं।

मैं अपने उन समस्त स्नेही मित्रों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इन गजलों को समय-समय पर सुनकर और सराहकर मेरा उत्साह बढाया है। श्रद्धेय सीतारामजी सेकसरिया, श्रीनारायणजी चतुर्वेदी, भागीरथजी कानोडिया, रामकुमारजी भुवालका, सीतारामजी चतुर्वेदी तथा स्वर्गीय रामेश्वरजी टाँटिया जैसे गुरुजनों का आशीर्वाद मुझे मिला है। न्यायमूर्ति श्री महेशनारायण शुक्ल, तेलगू के महान् साहित्यकार-दंपति श्री शेषेंद्रजी तथा राजकुमारी इंदिरा धनराजगिरि एवं कलकत्ता के अचना-परिवार के सभी सदस्यों का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने सदैव मुझे अपने प्रेम से अभिभूत रक्खा है।

बंधुवर आचार्य विश्वनाथसिंहजी ने सदा की भाँति इन ग़ज़लों को सँवारने-सजाने में मेरी सहायता की है। श्री गोवर्धन मिश्र, श्री निर्मल दे तथा श्री दीपक बका ने इन्हें रेडियो और टेलीविजन पर फैलाया है। श्री नंदलाल जी टाँटिया, श्री सहदेव जी देवडा, श्री बाबूलाल जी धानुका, श्रीमती आशादेवी मिश्रा तथा श्रीमती उषा केजरीवाल ने इनके प्रकाशन में गहरी रुचि ली है। मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

चौक, गया

गुलाब

बधुवर श्री नथमल केडिया

को,

पिछले तीस वर्षों के स्नेह-साहचर्य

की

सस्तुति मे

अनुक्रम

गध वनकर हवा मे विखर जायँ हम
ओस वनकर पँखुरियो से झर जायँ हम
तू न देखे, हमे वाग मे भी तो क्या
तेरा आँगन तो खुशबू से भर जायँ हम

हमने छेडा जहा से तेरे साज को
कोई वैसे न अव इसको छू पायेगा
तेरे होठो पे लहरा चुके रात भर
सोच क्या अव जिये चाहे मर जायँ हम

घुप अँधेरा है, सुनसान राहे है ये
कोई आहट कहीसे भी आती नही
खाये ठोकर न हमसा कोई फिर यहाँ
एक दीपक जलाकर तो घर जायँ हम

तेरे हर वोल पर हम तो मरते रहे
तुझको भायी न कोई तडप प्यार की
हमसे मोडे ही मुह तू रही जिदगी!
छाड भी जान अव अपने घर जायँ हम

रात काँटो प करवट वदलते कटी
हमको दुनिया ने पलभर न खिलने दिया
आयेगे कल नये रग मे फिर गुलाव
आज चरणो मे उनके विखर जायँ हम



तू जिसके लिए बेचैन है यों, वह दर्द को तेरे जान तो ले
सीने पे न रक्खे हाथ मगर, सीने की तड़प पहचान तो ले

होंठों पे न आये नाम तेरा, वह मुड़के तुझे देखे भी नहीं
तू भी है उसीका दीवाना, इस बात का दिलमें जान तो ले

हो फूल न तू काँटा ही सही, कुछ बाग में अपनी साख तो रख
वह देखे तुझे, खुश हो न अगर मुँह फेर के भौंहें तान तो ले

या जीतके उसको अपना बना, या हारके बन जा तू उसका
हर हाल में तेरी जीत ही है, यह प्यार की बाजी ठान तो ले

माना कि गुलाब उन आँखों में, रंगों का तेरे कुछ मोल नहीं
राहों में बिखर जा प्यार की तू, कुछ तिनका वहाँ भी मान तो ले

न रोकते है निगाहो से यहा पीने से
मगर मना है लगा लेना उनको सीने से

पिलाने आये वे, घूघट म मुँह छिपाये हुए
सुराही फेर ले, वाज आये ऐसे पीने से

मिली है आपकी खुशबू तो हर तरफ से हमे
भले ही बीच मे परदे पडे है झीने से

हमारे सामने आने मे भी झिझक थी जिन्हे
गले-गले हे वही आज थोडी पीने से

अभी से मोड न मुँह वेरहम ! अभी तो नही
भरा है जी तेरी अँगडाइयो मे जीने से

भले ही प्यार मे आसू न पोछता हो कोई
गुलाव और भी चमका है इस नगीने से

या तो हमेशा मिलते रहे हम, दोनो तरफ थी एक-सी उलझन
उसने न रुख से परदा हटाया, हमने न छोड़ा हाथ से दामन

कोई तो और भी आइने में था, साथ रहा हरदम जो हमारे
जब भी उठायी आँख तो देखी, हमने उसीकी प्यार की चितवन

उम्र की राह जो तै कर आये, आओ उसी से लौट चलें अब
देखो, यहीं तुम हमको मिले थे, यह है जवानी, यह है लड़कपन

नाव थी क्या लहरों की दुआ दे, नाव को डर तूफ़ान का कब था
जिनके लिये हम मौत से जूझे खुद वे किनारे ही हुए दुश्मन

रूप की हर चितवन में बसे हम, प्यार की हर धड़कन है हमारी
किसको गुलाब का रंग न भाया, किसमें नहीं काँटों की है कसकन

दिल में रहते थे कभी आपके हम, भूल गये !
उम्र भर की थी निभाने की कसम, भूल गये !

बड़े भोले हैं, बड़े दूध के धोये हैं आज
पीके जब प्यार में बहके थे कदम, भूल गये !

वे भी दिन थे कि हमी आये हरेक बात में याद
आज हर बात में कहते हैं कि हम भूल गये

हमसे कांटे भी निकलवाये थे तलवों के कभी
जाके मंजिल पे सभी राह के गम भूल गये !

अब तो कहते हैं कि भाते ही नहीं हमको गुलाब
आपके दिल को कभी था ये वहम, भूल गये !

तलव गम वी खुशी से वढ गयी है
ये चाहत ज़िंदगी से वढ गयी है

कोई आयेगा शायद आज वी रात
तडप कुछ शाम ही से वढ गयी है

ये क्या कम है, तेरी चरचा शहर मे
मेरी दीवानगी से वढ गयी है

तेरे जाने से क्या वीतेगी मुझ पर
कि वचैनी अभी से वढ गयी है

गुलाव ऐसे भी क्या कम थी ये दुनिया
मगर रौनक तुम्ही से वढ गयी है

खूब है प्यार का यह दस्तूर
पास भी है हम दूर ही दूर

परदा नही बेबात है आज
कोई तो है परदे मे जरूर

आप लगा ले जो मुँह पे नकाब
क्या है भला दर्पन का कसूर

और हा पीने को बेचैन
हम है नशे मे प्यार के चूर

उडने लगा है गुलाब का रग
एक निगाह तो कर ले हुजूर

थोडा पी लेते जो तलछट मे ही छोडा होता
आपने हम से मगर रुख भी तो जोडा होता

उसने ठोकर से जा प्याले को भी तोडा होता
हमने आखो से तो पीना नही छोडा होता

नाव इस तरह भवर के न लगाती फेरे
दिल मे मॉझी के अगर प्यार भी थोडा होता

देखकर ही जिसे आ जाती वहारो की याद
आधियो ! फूल तो एक वाग मे छोडा होता

डर न होता जो उसे राह के काटो का गुलाब
देखकर उसने तुझे मुँह नही मोडा होता

दिल बहुत यों तो तेरी राह में घबरा ही गया
तूने मुड़कर कभी देखा तो करार आ ही गया

प्यार हमसे जो नहीं है तो ये परदा क्यों है
कुछ तो दिल में है जो आंखों से झलमला ही गया

लाख सीने में छिपाया किये हम दिल को, मगर
फिर ये शीशा किसी पत्थर की चोट खा ही गया

अब खुशी क्या हो तेरे बाग में आने से बहार
देखता राह कोई फूल तो मुरझा ही गया

एक तेरे ही लिये बात नयी क्या है गुलाब
जो भी इस राह से गुजरा है, तड़पता ही गया

किसीके प्यार मे मरने को हम मरे तो सही
हमारी मौत से दुनिया मगर जिये तो सही

उभरती आती है आखो मे सूरते क्या-क्या
हमारे साथ कोई दो कदम चले तो सही

बडे ही शौक से उसको गले लगायेगे हम
नजर से आपकी बिजली कभी गिरे तो सही

बहुत हुआ यही एहसान हमको भूले नही
वे बेरुखी से ही उठकर गले मिले तो सही

कभी तो आपकी मुस्कान देख ले हम भी
हमारे बीच का परदा कभी उठे तो सही

खडी है प्यार की दुनिया नजर बिछाये हुए
गुलाब आपके होठो पे कुछ खिले तो सही

यो तो रगो की वो दुनिया ही छोड दी हमने
चोट एक प्यार की ताजा ही छोड दी हमने

सिर्फ आचल के पकड लेने मे नाराज थे आप
अब तो खुश हैं कि ये दुनिया ही छोड दी हमने

आप क्यो देखके आईना मुह फिरा बैठे
लीजिये, आपकी चरचा ही छोड दी हमने

क्या हुआ फूल जो होठो से चुन लिये दा चार
और खुशबू तेरी ताजा ही छोड दी हमने

पूछा उनसे जो किसी ने कभी, 'कैसे है गुलाब'
हसके बोले कि वो बगिया ही छोड दी हमने

अब क्यो भला किसीको हमारी तलाश हो
गागर के वास्ते नही पनघट उदास हो

कहते है जिसको प्यार है मजबूरियो का नाम
क्यो हो नजर से दूर अगर दिल के पास हो

क्योकर रहे बहार के जाने का गम हमे
कोयल की हर तड़प मे अगर यह मिठास हो

वादो को उनके खूब समझते है हम, मगर
क्या कीजिये जो दिल को तडपने की प्यास हो

भाती नही है प्यार की खुशबू जिसे गुलाब
शायद कभी उसे भी तुम्हारी तलाश हो

कभी प्यार से मुस्कुराओ तो क्या है
हमे भी जा अपना वनाओ तो क्या है

वही लौ इधर भी, वही लौ उधर भी
दिये से दिये को जलाओ तो क्या है

नजर आइना रूप भी आइना है
मगर बीच मे यह बताओ तो क्या है

हमारे-तुम्हारे सिवा कौन है जब
ये परदा घडी भर उठाओ ता क्या है

गुलाव एक दिन पास पहुँचेंगे खुद ही
जो आओ तो क्या है न आओ तो क्या है

हमसे यह बीच का परदा भी उठाया न गया
उनको बढ़कर कभी सीने से लगाया न गया

इसपे मचले थे कि देखेंगे तडपना दिल का
उनसे देखा न गया हमसे दिखाया न गया

कुछ इस तरह थी नजर, रात, हमारी बेताब
उनसे छिपते न बना, सामने आया न गया

दर्द वह दिल को मिला, उम्र की हद तक हमसे
चुप भी रहते न बना, यह के बताया न गया

यों तो गिलन को नये रोज ही खिलते है गुलाब
पर ये अंदाज किसी और मे पाया न गया

हमारा प्यार जी उठता, घडी मरने की टल जाती
जो तुम नजरो से छू देते तो यह दुनिया वदल जाती

उन्ही को ढूढती फिरती थी आखे जानेवाले की
न करते इतजार ऐसे, किसी की रात ढल जाती

हम उनकी वेरुखी को ही हमेशा प्यार क्यो समझे
कभी तो मुस्कुरा देते, तवीयत ही वहल जाती

उन्ही को चाहते है अपने सीने से लगा ले हम
कि जिनको याद आते ही छुरी है दिल पे चल जाती

वे दिन कुछ और ही थे जव गुलाव आखो मे रहते थे
विना ठहरे ही डोली अव वहारो की निकल जाती

नज़र आइने से मिलाता तो होगा
कभी वह भी घूघट उठाता तो होगा

नही मुडके देखे इधर जाने वाला
मगर दिल मे आसू वहाता तो होगा

जो तूफान मे नाव वढती रही है
कोई डॉड इसकी चलाता तो होगा

कोई क्यो लगाता है फेर यहा के
कभी यह खयाल उसको आता तो होगा

गुलाव अपनी रगीनिया पाके तुझमे
कभी दिल कोई झूम जाता तो होगा

रात किस तरह यहाँ हमने वितायी होगी
वात यह आपके जी मे भी तो आयी होगी

तडपी होगी कोई विजली भी तो उस दिल मे कभी
कोई वरसात उन आँखो मे भी छायी होगी

हम कहा और कहा आपसे मिलने का खयाल
किसी दुश्मन ने ये वेपर की उडायी होगी

अपनी नागिन सी लटे खोल दी होगी उसने
हम न होगे तो कयामत नही आयी होगी

रग चेहरे का तेरे अव भी ये कहता है गुलाव
रात भर आँख सितारो से लडायी होगी

तेरी तरह बोलो नही यह भी, प्यार जताकर देख लिया
हमने तेरी तस्वीर को भी सीने से लगाकर देख लिया

छूट गया था साथ भले ही, प्यार पे आँच न आयी मगर
जब भी मिले राहो मे कभी हम, उसने लजाकर देख लिया

और तो चाहे कुछ न हुआ हो बाग मे आने जाने से
फूल समझकर उसने हमे भी आख उठाकर देख लिया

सास की हर धडकन मे छिपी एक बेचैनी थी आठ पहर
हमने किसी की याद को अपने दिल से भुलाकर देख लिया

और ही कुछ है उस चितवन मे जिसके लिये बेचैन हैं हम
यो तो नजर के हर परदे को हमने हटाकर देख लिया

वह जो कुँआरी शाम को उस दिन आपको बेहद भाये थे
वैसे गुलाब न फिर खिल पाये, सब ने खिलाकर देख लिया

किसी बरहम के सताये हुए हैं
बडी चोट सीने पे खाये हुए है

हरेक रग मे उनको देखा है हमने
उन्ही के जलाये-बुझाये हुए हैं

कोई तो किरन एक आशा की फूटे
अघेरे बहुत सर उठाये हुए हैं

जहाँ चाद सूरज हैं, तारे है लाखो
दिया एक हम भी जलाये हुए हैं

गुलाब उनके चरणो मे पहुँचे तो कैसे
सभी ओर काटे बिछाये हुए है

किसीका प्यार समझे, दिल्लगी समझे, अदा समझें
बता दे तू ही अब ऐ ज़िंदगी ! हम तुझको क्या समझें

नही हटता है पल भर लाज का परदा उन आखो से
इशारो मे ही दिल की बात हम कैसे भला समझें

हम अपने को भी उनकी धड़कनो म देख लेते है
उन्हीके हम है, वे हमको भले ही दूसरा समझें

दिया जो आपने दिल म' कभी आकर जलाया था
दिया वह आधियो से लडते लडते बुझ गया समझें

गुलाब ऐसे तो हर तितली से ,आँखें चार करते हैं
जो दिल की पखुरी छू ले उसीको दिलरुबा समझें

यों पहुँचने को हजारों की नजर तक पहुँचा
फूल लेकिन न बहारों की नजर तक पहुँचा

दी थी आवाज बहुत डूबने वाले ने मगर
बुलबुला सिर्फ किनारों की नजर तक पहुँचा

अक्ल को राह न मिल पायी खुद अपने घर की
प्यार का अक्स सितारों की नजर तक पहुँचा

उनको हर बात में एक बात नयी आयी नजर
नाम जब आपका यारों की नजर तक पहुँचा

हो गया बंद भले ही तेरे कांटों में गुलाब
बनके खुशबू तो हजारों की नजर तक पहुँचा

हुआ प्यार का यह असर मिलते-मिलते
कि झुकने लगी है नजर मिलते मिलते

हटा रुख़ से परदा न बेगानेपन का
कोई रह गया उम्र भर मिलते-मिलते

न था दिल का कोई ख़रीदार तो क्या
चले सब में हम राह पर मिलते-मिलते

नहीं खेल है उनकी आंखों को पढ़ना
कि मिलती है दिल की ख़बर मिलते मिलते

गुलाब आप कितनी भी ख़ुशबू छिपाये
नजर कह गयी कुछ मगर मिलते मिलते

चलता है साथ-साथ कोई यो तो राह मे
वेगानापन भी कुछ है मगर उस निगाह मे

वह जानते हमी हैं जो खायी है हमने चोट
एक वेरहम को अपना बनाने की चाह में

आयी न हो हमारी कही, रात, उनको याद
शवनम के भी निशान हैं फूलो की राह मे

नश्तर चभा के दिल के होते गये करीव
कहते रहे हम 'और' 'और' 'आह 'आह' मे

दम भर भी वाग मे न रहे चैन से गुलाव
काँटे विछे थे प्यार के आचल की छाह मे

दिल की तड़प नीलाम हुई है
अब ये कहानी आम हुई है

आइना खुद ही टूट गया था
मुफ्त नजर बदनाम हुई है

आपने घूंघट भी न उठाया
और ये रात तमाम हुई है

प्यार यहां तक जा पहुँचा है
अक्ल जहां नाकाम हुई है

अब तो गुलाब उन आँखों में ही
तुमको सुबह से शाम हुई है

कोई भले ही बढके गले से लगा न हो
मुमकिन नही कि उसको , हमारा पता न हो

दिल का कभी हमारे तडपना तो देखिय
जिस शख्स इसके पास कोई दूसरा न हो

हमको तो डर ही क्या है,उन्ही को हँसेंगे लोग
यह ज़िंदगी का साज कही बेसुरा न हो

पढते है खत को हाथ मे ले लेके बार-बार
शायद लिखा हो आपने, शायद लिखा न हो

काँटा से यो न आइये आंचल छुडा के आज
रुकिये कि एक गुलाब भी उनमे खिला न हो

गीत तो ये हैं सभी उनको सुनाने के लिये
कुछ मगर हैं दिल ही दिल मे गुनगुनाने के लिये

सामने नजरो के आना उनसे बन पाता नही
बन गये थे सौ वहाने दिल मे आने के लिये

यो तो गजलो के वहाने उनसे मिल लेते है हम
पर वहाना चाहिये कुछ तो वहाने के लिये

कट गयी है उम्र सारी काटते चक्कर मगर
राह मिलती है न तेरे घर मे आने के लिये

एक ही चितवन ने उनकी हमसे सब कुछ कह दिया
एक चिन्गारी बहुत थी घर जलाने के लिये

जिंदगी की रात है यह एक ही तेरी गुलाव
और वह भी है मिली आसू वहाने के लिये

यो तो हर राह के पत्थर पे सर को मार लिया
नाम उनका ही मगर हमने बार बार लिया

जब किसी और ने मुडकर नही देखा इस ओर
हमने धीरे-से तुझे दिल मे तब पुकार लिया

हमने जिस ओर भी रक्खे थे बेसुधी मे कदम
तूने उस ओर ही मजिल का रुख सुधार लिया

या तो गुजरे है इन आखो से हसीन एक-से एक
और ही था कोई दिल मे जिसे उतार लिया

यह तो किस्मत न हमारी थी, मिले होते गुलाब
हमने काटो से ही लेकिन ये घर सँवार लिया

सितारो से आगे वढे जा रहे हैं
निगाहो पे किसकी चढे जा रहे हैं

न जिसके शुरू आखिरी मे है पन्ने
किताव एक ऐसी पढे जा रहे हैं

जो सर फोडना ही रहा पत्थरो से
ये फूलो मे दिल क्यो गढे जा रहे हैं

उधर राह भी देखता होगा कोई
कदम जिस तरफ ये वढे जा रहे हैं

गुलाव आज मिटने का गम है तो इतना
तेरे हाथ से अनगढे जा रहे हैं

हमे तो हुक्म हुआ सर झुकाके आने का
नही खयाल भी उनको नज़र उठाने का

ये किस बहार की मजिल पे रुक गए हैं कदम
नजर को आगे इशारा नही है आने का

निगाहे बढके लिपटती रही निगाहो से
चले तो वक्त नही था गले लगाने का

नही जि प्यार हो हमसे तो दोस्ती ही सही
गरज की कुछ तो बहाना हो मुस्कुराने का

गुलाब यो तो हजारो ही खिल रहे हैं यहा
है रग और ही लेकिन तेरे दीवाने का

कोई जान अपनी लुटा गया, तेरी चितवनो के जवाव मे
उसे गध प्यार की ले उडी, नही और क्या था गुलाव मे

ये सवाल है मेरे प्यार का, ये जवाव है तेरे रूप का
तुझे क्या वताऊँ मैं दिलरुवा ! जो लिखा है दिल की किताव मे

जो चढा तो फिर न उतर सका, मेरी उम्र भर का ये था नशा
जिसे तू नज़र से पिला गया, उसे क्या मिलेगा शराव मे

जो कहा ये मैंने कि हमसफर, कभी मेरी ओर भी हो नजर
तो हँसा कि प्यार के नाम पर, यही गम हैं तेरे हिसाव मे

कभी तुम हुये भी जो सामने, तो नज़र मिली न गले-गले
ये कसक, ये दद, ये तडपने, ये जलन है उसकी गुलाव में

बहुत हमने चाहा कि दिल भूल जाये
मगर तुम भुलाने मे भी याद आये

किसी मोड पर जिंदगी आ गयी थी
बढा कारवाँ और हम रुक न पाये

नही उनको दिल से भुलाया है हमने
कई बार यो तो कदम डगमगाये

कभी जो मिलें फिर तो पहचान लेना
नही तुमसे हम आज भी है पराये

तुम्हारी ही यादो की लौ जल रही थी
दिवाली के जब भी दिये जगमगाये

कभी अपने हाथो सँवारा था तुमने
गुलाब आज तक वैसे खिल ही न पाये

जी से हटती ही नहीं याद किसीकी गुमनाम
जैसे बीमार के आँगन में बरसती हुई शाम

तू जो परदा न हटाये तो ये किसका है कसूर
हमने यह रात लिखा दी है तेरे प्यार के नाम

फिर से बिछड़े हुये साथी जहाँ मिल जायँ कभी
दूर इस राह में ऐसा भी कोई होगा मुकाम

उनसे कहने की तो बात थी हजारों ही मगर
मुँह भी हम खोल न पाये कि हुई उम्र तमाम

हमने माना बड़ी नाज़ुक है कलम तेरी गुलाब
पखड़ी भी कभी कर देती है तलवार का काम

दिल म ये प्यार के वहम क्या है
तू ही वतला कि तेरे हम क्या है

जव न कोई लगाव है हमसे
ये इशारे कदम-कदम क्या है

क्या करें दिल किसी पे जो आ जाय
जानते हम भी ये भरम क्या है

उनके वादो प जिये जाते है
ये भी एहसान उनके कम क्या है

उनके रगा म मिल गये है गुलाव
अव किसे क्या वताये, हम क्या है

मिल गयी क्या तेरी आँखों में झलक प्यार की थी
आखिरी वक्त तड़प और ही बीमार की थी

यों चलायी थी छुरी उसने गले पर हँसकर
हम ये समझे कि अदा यह भी कोई प्यार की थी

उसको गुमनाम ही रहने दो कोई नाम न दो
वह जो ख़ुशबू सी निगाहों में इंतजार की थी

दोष लहरों का नहीं था न किनारों का कसूर
दिल की पतवार तो ख़ुद ही बिना पतवार की थी

•

भेद तेरा उसे कोयल न कह गयी हो गुलाब
आज बदली हुई चितवन ज़रा बहार की थी

कितने दिये बुझाये होगे
तब साजन घर आये होगे

नाहक प्यार का दम भरना है
कल ये बोल पराये होगे

साज सभीने छेडा लेकिन
सुर मे हमी रह पाये होगे

हैरत है जब तक न मिले तुम
हम क्या करते आये होगे

इतने लाल गुलाब कहा थे
तुमने नयन मिलाये होगे

तेरे वादो पे अगर एतवार आ जाये
यो पलटकर न कोई वार-वार आ जाये

कुछ तो छलके तेरे प्याले मे भरी है जो शराव
कुछ तो इस दर्द भरे दिल को करार आ जाये

तेरी खुशवू से है तर वाग का पत्ता-पत्ता
क्यो न फिर हमको हरेक फूल पे प्यार आ जाये

हमने हर मोड पे आखो को विछा रक्खा है
जाने किस ओर से सावन की फुहार आ जाये

हम न मानेगे कभी दिल मे भी उनके है गुलाव
रग आखो मे भले ही हजार आ जाये

उन्ह नेतकल्लुफ किया चाहता हूँ
ये क्या कर रहा हूँ। ये क्या चाहता हूँ।

कभी पूछ भी लो कि क्या चाहता हूँ
तुम्हें चाहने की सज़ा चाहता हूँ

ज़रा अपने आचल का साया तो कर लो
दिया हूँ, हवा से बुझा चाहता हूँ

रहूँ होश मे जब ये परदा उठाओ
तुम्ही मे तुम्हे देखना चाहता हूँ

गुलाब आज यो बाग मे कह रहा था
'तुझे मैं भी ऐ बेवफा! चाहता हूँ'

आखिर इस दिल की पुकारो मे तुझको देख लिया
डूबते वक्त किनारो मे तुझको देख लिया

यो तो दुनिया मे कही था न पता तेरा मगर
हमने कुछ प्यार के मारो मे तुझको देख लिया

फिर कभी लौटके आयी नही खुशबू वैसी
दिल ने सौ वार वहारो मे तुझको देख लिया

हमने पायी है वही टूटते दिल की तस्वीर
जिंदगी ! चांद सितारो मे तुझको देख लिया

तू भले ही रहा दुनिया से अलग होके गुलाव
पर किसीने था हजारो मे तुझको देख लिया

यो न मिलने मे शरमाइय
दो घडी रुक भी तो जाइये

प्यार मुंह से न कहते वन
प्यार आँखो से जतलाइये

जान हाजिर है, लेकिन हुजूर !
अपनी सूरत तो दिखलाइये

शत है प्यार की एक ही
खुद तड़पिये तो तडपाइये

सामने उनके चुप है गुलाव
कुछ भी कहिये तो शरमाइये

हमको वातो से पिलाया है, कोई वात नही
कुछ नशा यो भी तो आया है, कोई वात नही

जिदगी है कि हरेक हाल में कट जाती है
आपने दिल से भुलाया है, कोई वात नही
आपको याद हमारी भी तो आयी होगी
नाम मुँह पर नही आया है, कोई वात नही

हमको खुशवू तो उन आँखो की मिली है हरदम
प्यार अगर मिल नही पाया है, कोई वात नही

उनके नाखून कटाने की हे चरचा घर-घर
हमने सर भी जो कटाया हे, कोई वात नही

फिर वहार आयेगी, फिर वाग मे फूलेंगे गुलाव
जी तो ऐसे ही भर आया है, कोई वात नही

यो उडा है नशा जवानी का
जैसे वालू पे हर्फ़ पानी का

ख़ून से अपने लिख गये हैं जवाव
हम उन आँखो की वेज़ुवानी का

रात आया था लटें खोले कोई
फूल महका था रातरानी का

कही ऐसा न हो मिलें जव आप
कहने वाला हो चुप कहानी का

रग देखें गुलाव के भी आज
जिनको दावा है वागवानी का

भले ही हाथ से आँचल छुड़ाये जाते हैं
वे और भी मेरे दिल मे समाये जाते हैं

उन्हें सवाल भी अपना सुना के क्या होगा
जो हर सवाल पे बस मुस्कुराये जाते हे

शराब तो ये सभी को पिला रहे है मगर
हमे कुछ और नजर से पिलाये जाते है

कहे भी क्या जो वही पूछ रहे है हमसे
'ये गम है क्या जो तेरा दिल जलाये जाते ह ?

गुलाब बाज न आते है उनसे मिलने से
भले ही राह मे काटे बिछाये जाते है

कोई छेड़े हमे किस लिये
हम तो मरने की धुन मे जिये

पांव धीरे से, रखना हवा
फूल सोये हैं करवट लिये

सूरतें एक से एक थी
हम तो उनको ही देखा किये

अब ये प्याला भी छलका तो क्या
उम्र कट ही गयी बेपिये

और भी लाल होगे गुलाब
कोई आया महावर दिये

दिल तो हमने ही लगाया है, आप चप क्यो हैं ।
दाव यह हमने गँवाया है, आप चुप क्यों है ।

लोग क्या क्या नही कहते हैं हमे दुनिया मे
आपका नाम भी आया है, आप चुप क्यो है ।

हम अगर कुछ नही कहते तो कोई बात नहीं
गीत कोयल ने सुनाया है, आप चुप क्यो है ।

यह तो कहिये कि नजर क्यो है खोयी खोयी हुई
भेद क्या हमसे छिपाया है, आप चुप क्यो है ।

ऐसे गुमसुम नही हमने कभी देखे थे गुलाब
मुँह भी दुनिया ने फिराया है, आप चुप क्यो है ।

फूल काँटो के सग अच्छा है
उनको भाये जो रग अच्छा है

देखकर हमको मुह फिरा बैठे
प्यार करने का ढग अच्छा है

हम भी क्या याद करेंगे दिल मे
आ गये दिल से तग, अच्छा है

उनपे रोने का कुछ असर तो हुआ
हँस पडे, 'जलतरग अच्छा है'

खून अपना बहा रहे है गुलाब
लोग कहते हैं—'रग अच्छा है'

यादो के समुदर मे नजर डूब रही है
फिर प्यार की लहर में नज़र डूब रही है

मिलता नहीं है आपसे तिनके का सहारा
दिल फँस गया भँवर मे, नजर डूब रही है

देखा किये ह हमको सदा दूर ही से आप
अब आइये भी घर मे, नजर डूब रही है

सब हाथ मल रहे है खडे, और जिदगी
उलझा के हर नजर मे नज़र, डूब रही है

मन मे बसी है और ही खुशबू कोई गुलाब
ऐसे तो बाग भर मे नज़र डूब रही है

कहिये तो कुछ कि काट ले दो दिन खुशी से हम
घबरा गये है आपकी इस बेरुखी से हम

हर शक्स आइना है हमारे खयाल का
मिलते गले-गले है हरेक आदमी से हम

आयेगा कुछ नजर तो कहेंग पुकारकर
आखें मिला रहे हैं अभी ज़िंदगी से हम

आये भी लोग आपके मिलकर चले गये
देखा किये है दूर खडे अजनबी-से हम

रगत किसीकी शोख निगाहो की है गुलाब
कह तो रहे हैं बात बडी सादगी से हम

जब तेरा दर करीब होता है
हाल दिल का अजीब होता है

शाम झुकती है इन लटो की किधर
कौन वह खुशनसीब होता है

आये जब ताब देखने की नही
खूब दर्शन नसीब होता है ।

दूर नजरो से जा रहा है कोई
और दिल के करीब होता है

सामने उनके मुँह सिये है गुलाब
प्यार कितना गरीब होता है

उनका बदला हुआ हर तौर नज़र आता है
अब न पहले का वही दौर नज़र आता है

यों न झुकती थी हमे देखके नज़रें उनकी
आज नज़रो मे कोई और नज़र आता है

अक्स हम उनका उतारा किये है कागज पर
कीजिए जब भी जरा गौर, नज़र आता है

इस बयाबान के आगे भी शहर है ऐ दोस्त !
और, दो चार कदम और, नज़र आता है

कोई कोयल न तुझे ढूढती फिरती हो गुलाब
आज आमो पे नया बौर नज़र आता है

लाख चक्कर हो सुराही के हमारा क्या है
हम तो प्यासे रहे पानी के, हमारा क्या है

उनकी महफिल है, शराब उनकी है, प्याला, उनका
हम तो दो घूट चले पीके, हमारा क्या है

उड रही है तेरे जूडे की जो खुशबू हर ओर
एक सिवा दिल की तसल्ली के, हमारा क्या है

हँसके बहला भी लिया, रूठ के तडपा भी दिया
हम हैं मुहरे तेरी बाजी के, हमारा क्या है

जब कहा उनसे खिले आज तो होठो पे गुलाब
हँसके बोले कि है माली के, हमारा क्या है

आपके दिल मे हमारी भी चाह है कि नही !
कही आगे भी सितारो के राह है कि नही !

यह तो किस मुंह से कहे आप हमारे हो जायें
पर हमे अपना बनाने की चाह है कि नही !

आपका दर न सही, राह का पत्थर ही सही
हमको हर हाल में होना तबाह है कि नहीं !

यह तो किस्मत न हुई, फूल के सामने हो कभी
पर इधर आपकी तिरछी निगाह है कि नहीं !

झुकके आंखो मे किसी की ये पूछते है गुलाब
आपके दिल मे पहुंचने की राह है कि नही !

कोई रोने के सिवा काम भी है।
मेरी हर सुबुह,मेरी शाम भी है

दोस्त कर लेंगे याद मरने पर
दिल की बदनामियों मे नाम भी है

जिसमे हम-तुम भी छूटते पीछे
प्यार मे ऐसा एक मुकाम भी है

है तो दुनिया बडी हसीन, मगर
यह किसी दिलजले का काम भी है

खूब कांटो मे खिल रहे हैं गुलाब
प्यार की है सजा, इनाम भी है

बस नज़र का तेरी अंदाज़ बदल जाता है
सुर तो रहते है वही, साज़ बदल जाता है

कुछ तो कहता है कोई आँखो-ही-आँखो मे, मगर
बात ही बात मे वह राज बदल जाता है

कौन होता है बुरे वक्त मे साथी किसका
आइना भी ये दगाबाज बदल जाता है

लीजिए ज़ब्त किया हमने, मगर मुँह का रग
क्या करे सुनके जो आवाज बदल जाता है

आज तुझसे वे निगाहें भी मिल रही हो गुलाब
उनके मिलने का तो अदाज बदल जाता है

खयालो मे उनके समाये हैं हम
भले ही नजर मे पराये है हम

कभी इसको मुँह तक भरें तो सही
ये प्याला बहुत बार लाये है हम

हुआ क्या जो सब उठके जाने लगे
अभी बात भी कह न पाये हैं हम

जिन्हे देखकर था नशा चढ गया
वही कह रहे, पीके आये हैं हम

मसलती है पावो से दुनिया गुलाब
मगर अब हवाओ मे छाये है हम

~~दर्द दिल थाम के सहते हैं, हम तो चुप ही हैं~~
लोग क्या-क्या नही कहते हैं, हम तो चुप ही है

आप क्यो दिल के तडपने का बुरा मान गये
आपसे कुछ नही कहते हैं, हम तो चुप ही है

सुख वादल जो उमड आये थे आखो में कभी
वनके आँसू वही वहते है, हम तो चुप ही है

हम खतावार नहीं दिल के वहक जाने के
ये कगार आप ही ढहते है, हम तो चुप ही है

उनकी आँखो में खिले हैं कुछ इधर ऐसे गुलाव
खुद वही छेडते रहते है, हम तो चुप ही है

सौ ऐब हैं मुझमे न कोई इल्मो हुनर है
ज़र्रे को आफताब किया, तेरी नज़र है

हरदम चिराग दर चिराग जोड़ते चलो
यह रात हे ऐसी कि नही जिसका सहर है

कुछ तो सता रहा है ज़माने का गम हमे
कुछ आपकी ख़ामोश निगाहो का असर है

फूलो से हार गूँथके लाना है और बात
काँटो से ज़िदगी को सजाने मे हुनर है

कुछ बुलबुलो ने लूट लिया, कुछ बहार ने
बाकी जो है गुलाब वो दुनिया की नज़र है

वैसे तो चाहने से यहाँ क्या नही होता
बस आपकी नजर का इशारा नही होता

सोया किसीके रेशमी आँचल की छांह में
बीमार है अच्छा कि जो अच्छा नही होता

सुनता हूँ दिल में और भी एक दिल की धडकनें
मैं होके अकेला भी अकेला नही होता

थे आप और आपकी दुनिया भी थी मगर
होता नही जो मैं, ये तमाशा नही होता

आकर जरा जो देख भी लेते गुलाब को
रग उनका इस तरह कभी फीका नही होता

अपनी बेताबी से उनको बेखबर समझे है हम
फिर भी कुछ है प्यार का उनपर असर, समझे हैं हम

ये तडपती चितवनें, ये धडकनें दिल की उदास
कोई समझे या नही समझे, मगर समझे हैं हम

दो घडी रोना-कलपना, दो घडी मस्ती के रग
आपकी आँखो का इनको खेल भर समझे है हम

देखकर भी हमको होठो पर हँसी आयी नही
आज कुछ बदली हुई है वह नजर, समझे है हम

तोड ले जायेगा कोई तुझको दम भर मे गुलाब
प्यार के ये रग होगे बेअसर, समझे है हम

भले ही दूर नजर से सदा रहा हूँ मैं
महक तो आपकी साँसों की पा रहा हूँ मैं

मिलेगा कुछ तो उजला भटकनेवालों को
चिराग अपने लहू से जला रहा हूँ मैं

निशान आपके-कदमों के मिल न पाते हों
निशान सर की रगड़ से बना रहा हूँ मैं

जमाना हो गया आँखों का खेल चलते हुए
गले से आज तो लगिए कि जा रहा हूँ मैं

किसीने अपनी उँगलियों से छू दिया है गुलाब
नहीं पता भी मुझे अब है, क्या रहा हूँ मैं

प्यार दिल मे न अगर था तो बुलाया क्यो था
हमसे मिलने का खयाल आपको आया क्यो था

जब नज़र मोडके चुपके से चले जाना था
दो घडी के लिए सीने से लगाया क्यो था

हमको आँखे भी उठाने की मनाही थी अगर
आपने खुद को सितारो से सजाया क्यो था

सर पटकती है शमा लाश पे परवाने की
कोई पूछो भी तो उससे कि जलाया क्यो था

हमने माना कि बसे आपके दिल मे थे गुलाब
आपने उनको मगर इतना सताया क्यो था

बुरा कहे तो बुरे है, भला कहे तो भले
हम अक्स आपके दिल के ही आइने मे ढले

हम ऐसे होश से बाज़ आये, दूर-दूर हो आप
ये बेसुधी ही भली है कि हैं गले-से-गले

पहुँचते लोग हैं सोये-ही-सोये मज़िल तक
जगे हुए भी मगर हम तो दो कदम न चले

छिपा के रख लो कोई प्यार की किरन इसकी
पता नही कि दिया फिर कभी जले न जले

भले ही कोई निगाहे चुरा रहा है गुलाब
छिपा है प्यार भी पलको की बेरुखी के तले

दर्द कुछ और सही, दिल पे सितम और सही
आपको इसमें खुशी है तो ये गम और सही

जिंदगी रेत के ढूहो मे गुजारी हमने
इस बयाबान मे दो-चार कदम और सही

है जो धोखा ही सरासर हरेक अदा उनकी
हमको यह प्यार का थोड़ा सा भरम और सही

खुशनसीबी है कि इस दौर मे शामिल भी है हम
बेरुखी हमपे इन आंखो की कसम और सही

वे भी दिन थे कि निगाहो मे खिल रहे थे गुलाब
आज कहते है हमे और तो हम और सही

बात जो कहने की थी होठों प लाकर रह गये
आपकी महफिल मे हम खामोश अक्सर रह गये

एक दिल को राह मे आया था छोटा सा मुकाम
हम उसी को प्यार की मजिल समझकर रह गये

यो तो आने से रहे घर पर हमारे एक दिन
उम्र भर को वे हमारे दिल मे आकर रह गये

क्यो किया वादा नही था लौटकर आना अगर
इस गली के मोड पर हम जिंदगी भर रह गये

रौद कर पावो से कहते 'खिल न क्यो पाते गुलाब'
दग हम तो आपकी इस सादगी पर रह गये

ये हसीन बेकली क्यो सीने मे भर गयी है
मेरे दिल के पास आकर वो नजर ठहर गयी है

मेरे प्यार की वजह से ये हुई है रगसाजी
मेरी हर नजर से तेरी रगत निखर गयी है

ये लटे थी रात किसकी मेरे बाजुओ पे बिखरी
मेरे हर खयाल मे एक खुशबू-सी भर गयी है

मुझे हँसके अब विदा दो, मेरी ज़िंदगी का गम क्या
ये समझ लो आज दुल्हन साजन के घर गयी है

नही अब गुलाब तुझमे हो शोखिया भले ही
तेरी तडपना से कुछ तो दुनिया सँवर गयी है

ज़िंदगी मुझको कहा आज लिये जाती है
दूर तक अव कोई आवाज नहीं आती है

हाथ मे उनके ही नाडी है देखिये क्या हो
जिनके छू लेने से धडकन मेरी वढ जाती है

कोई मिल जाता वहाना गले लगाने का
यो तो खुशवू तेरी हर सास मे लहराती है

भूलकर नाम न ले कोई वफादारी का
अव तवीयत मेरी इस नाम से घवराती है

लाख खिलते हो गुलाव आपकी आंखो मे, मगर
अव निगाहो मे वो खुशवू नहीं मिल पाती है

कौन जाने उस तरफ कोई किनारा हो न हो
मिल भी जाओ आज, कल मिलना हमारा हो न हो

रात भर जंगल-पहाड़ों में भटकता फिर रहा
है हमीं सा चाँद भी किस्मत का मारा, हो न-हो

हम से छिप सकती नहीं रंगत किसी के प्यार की
दिल तो धड़का है, निगाहों का इशारा हो न हो

आज तो मिलती है उन आँखों की खुशबू दूर से
क्या पता, कल राह में यह भी सहारा हो न हो

या तो शोभा बढ़ गयी इस बाग की तुझसे गुलाब
प्यार की शोखी मगर उनको गवारा हो न हो

प्यार औरो से नही, हमसे अदावत न सही
है तो शोखो ये निगाहो की, शरारत न सही

लीजिए हम वो मुकदमा ही उठा लेते हैं
अपनो किस्मत ही सही, आपको आदत न सही

आप आये न अगर हमका बुला सकते हैं
हमको फुरसत है वहुत, आपको फुरसत न सही

दिल मे जा आपकी तस्वीर उतर आयी है
रग तो प्यार का उसमे है, हकीकत न सही

उनके गमन्ने म तो हर रोज ही खिलता है गुलाव
न हुई तेरी अगर वाग मे इज्जत, न सही

कौन जाने उस
मिल भी जाओ आ

रात भर जगल
है हमी सा चाद

हम से छिप सच
दिल ता धड़का

आज तो मिल
क्या पता, कः

यो तो शोभा
प्यार की शाः

नज़र भले वो हमे देखके शरमा ही गयी
झलक तो प्यार की परदे से छनके आ ही गयी

कसूर कुछ तेरे हाथों का भी तो है, फनकार
करें भी क्या जो ये तस्वीर दिल को भा ही गयी

चले जो हम तो चली साथ-साथ किस्मत भी
हरेक मुकाम पे पहले ये बेवफा ही गयी

सँभाली हाथ की पतवार बहुत हमने, मगर
पहुँचके नाव किनारे पे डगमगा ही गयी

गली में उनकी हज़ारो महक उठे है गुलाब
हमारे दिल की तबाही भी रंग ला ही गयी

यो नज़र से नज़र नही मिलती
दिल की धडकन अगर नही मिलती

सारी दुनिया की है खबर हमको
एक अपनी खबर नही मिलती

उनके आंचल की मिल रही है हवा
बेसुधी बेअसर नही मिलती

हमने माना कि पास है हरदम
क्यो झलक उम्र भर नही मिलती

बाग से आये तो निकल के गुलाब
राह आगे की पर नही मिलती

नज़र भले वो हमें देखके शरमा ही गयी
झलक तो प्यार की परदे से छनके आ ही गयी

कसूर कुछ तेरे हाथों का भी तो है, फनकार
करे भी क्या जो ये तस्वीर दिल को भा ही गयी

चले जो हम तो चली साथ-साथ किस्मत भी
हरेक मुकाम पे पहले ये बेवफ़ा ही गयी

सँभाली होश की पतवार बहुत हमने, मगर
पहुँचके नाव किनारे पे डगमगा ही गयी

गली में उनकी हज़ारों महक उठे हैं गुलाब
हमारे दिल की तबाही भी रंग ला ही गयी

गम बहुत, दर्द बहुत, टीस बहुत, आह बहुत
फिर भी दिल को है उसी बेरहम की चाह बहुत

हमने माना कि खुशी आपको होती इसमे
है मगर आपकी खुशियो से हम तबाह बहुत

क्या हुआ अब जो इधर रुख नही करता है कोई
चाह है तो मिलेगी बदगी की राह बहुत

हाय उस दूध की धोयी नजर का भोलापन
सैकडा खून भी करके है बेगुनाह बहुत

यो तो उस दिल मे बसी आपकी सूरत ही गुलाब
है मगर और भी फूलो मे रस्मो-राह बहुत

और दीवाने सभी चक्कर लगाकर रह गये
वस हमी गलियो मे तेरी ज़िंदगी भर रह गये

वह उठी आँधी कि मंजिल का पता भी खो गया
दिल के जो अरमान थे दिल मे तड़पकर रह गये

फ़िक्र क्या अव तो नज़र आने लगा है उनका घर
वीच मे वस मील के दो चार पत्थर रह गये

वह नज़र थी और जो दिल को उड़ाकर ले गयी
जव फिरी, हम अपनी किस्मत के वरावर रह गये

कारवाँ गुज़रे वहारो के भी सज धजकर गुलाव
तुम हमेशा वाधते ही अपना विस्तर रह गये

नही इस दद का उनको पता हो, हो नही सकता
कोई दिल की लगी से अनछुआ हो, हो नही सकता

भले ही दो घडो के वास्ते प्याला मिला हमको
किसी ने भूल से पर दे दिया हो, हो नही सकता

असर कुछ प्यार मे है तो लिपट जायेगा सीने से
मिटे हम और कोई देखता हो, हो नही सकता

भले ही हव न हा जव प्यार को शहनाईयां गूँजें
तुम्हारे दिल मे कोई दूसरा हो, हा नही सकता

गुलाव ऐसे तो वे तेरी पँखुरिया नोचते कव थे
नही कुछ प्यार भी इसमे छिपा हो, हो नही सकता

किस अदा से वो मेरे दिल मे उतर आता है
जीतकर जैसे जुआरी कोई घर आता है

लाख हमसे कोई आँखें चुरा रहा है मगर
प्यार का रग निगाहो मे उभर आता है

हमने देखा है किनारा किसीके आँचल का
जब कही कोई किनारा न नजर आता है

साथ छूटा है हरेक प्यार के राही का जहाँ
एक इस राह मे ऐसा भी शहर आता है

खुद ही माना कि फँसे दौडके काँटो मे गुलाब
कुछ तो इल्जाम मगर आपके सर आता है

राह फूलो से सजेगी एक दिन
प्यार की डोली उठेगी एक दिन

उनपे मरते हैं, हमारी मौत भी
ज़िंदगी बनकर रहेगी एक दिन

प्यार सच्चा है तो मंज़िल दूर क्या
खुद ही पावो से लगेगी एक दिन

ज़िंदगी के ठाठ पर मत जाइए
यह निगाह फेर लेगी एक दिन

धूल से मुँह मोड़ना कैसा गुलाब
धूल ही बिस्तर बनेगी एक दिन

आ गयी किस घाट पर यह नाव दिन ढलते हुए
धार के साथी सभी मुँह फेरकर चलते हुए

तेरी आखो से तेरे दिल का था कितना फ़ासला
पर यहा एक उम्र पूरी हो गयी चलते हुए

हमने रज दी है छिपाकर इनमे दिल की आग भी
गुल नही होगे कभी अब ये दिये जलते हुए

लाख दस्तक दे हवाये आके इस टहनी पे आज
फूल जागेंगे नही आखे मगर मलते हुए

तुझसे मिलने का किया वादा तो है उसने गुलाब
टल न जाये वह सदा को दिन ब दिन टलते हुए

कोई दिल मे आकर चला जा रहा है
निगाह मिलाकर चला जा रहा है

हजारो ये वादे, हजारो थी कसम
मगर सव भुलाकर चला जा रहा है

जो पूछा भी उससे कि फिर कव मिलोगे
तो वस मुस्कुरा कर चला जा रहा है

जिसे देखने को खडा था जमाना
वो परदा गिराकर चला जा रहा है

गुलाव आप जिसके लिये खिल रहे थे
वही मुह फिराकर चला जा रहा है

उनको आवाज बुलाती है हर कदम के साथ
जिंदगी दौडती जाती है हर कदम के साथ

कोई यह भी तो कहा इसका नशा कैसा है
यह जो प्याली बढी आती है हर कदम के साथ

कारवाँ यो तो हजारो ही चल रहे हर रोज
दूर मजिल हुई जाती है हर कदम के साथ

जिंदगी हमको पिलाती है जहर के प्याले
और पायल भी बजाती है हर कदम के साथ

आप रगो से भरी डालपे फूले न गुलाब
सर भी नागिन ये उठाती है हर कदम के साथ

नशे मे प्यार के लिखते रहे हैं कविता हम
पता नही कि उन्हे कह गये है क्या-क्या हम

उन्ही से हो गयी रगीन जिंदगी भी मगर
भले ही आपसे खाया किये हैं धोखा हम

बहुत है शोर ज़माने मे आपका लेकिन
कभी तो देख लें सूरत उठाके परदा हम

जगह कही पे हमारी भी दिल मे है कि नही
सवाल आज उन्ही से करेंगे सीधा हम

चलो ये कैसी हवाये उदास है हर फूल
नही गुलाब मे पाते है रग पहला हम

ये सितार बज उठे यों तेरे तोडने के पहले
कि तडप ले कुछ तो दुनिया मेरे छोडने के पहले

जो छलक रहा है प्याला तेरे हाथ से तो क्या है
कभी मुँह से तो लगा ले इसे फोडने के पहले

जिसे बेरुखी था समझा वो नजर थी बेबसी की
तेरी आख भर ही आयी, मुझे छोडने के पहले

बडी हसरतो से आयी मुझे नीद उनके दर पर
मेरी जिंदगी ठहर जा, इसे तोडने के पहले

तेरे हार मे थे यो तो कई फूल रगवाले
ये गुलाब पर कहाँ था मुझे जोडने के पहले

देखो कहा पर आ गया है मोड अपनी बात का
आखें झपकने लग गयी, पिछला पहर है रात का

हम जिंदगी के खेल से उठकर कभी भागे नही
या तो सदा बनता रहा नक्शा हमारे मात का

धडका कभी दिल भी कोई, माना हमारे वास्ते
होठो पे जो आये नही, क्या मोल है उस बात का

चुप होके भी तो दो घडी बैठो नजर के सामने
रुक रुक के जब पानी गिरे तब है मजा बरसात का

हरगिज़ गुलाब ऐसे न बे लगते गले से आपके
कुछ और ही जादू हुआ इस दर्द की सौगात का

कई सवाल तो ऐसे भी जी मे आये है
कि सुनके जिनको वहुत आप मुस्कुराये है

नशे-नशे में उन्हे कह दिया है क्या हमने
वे आज हमसे निगाहे मिला न पाये हैं

भले ही राह मे दिल को थे सैंकडों तूफान
मगर हम आपकी की लौ को वचाके लाये है

हमारी राह मे आये हैं कुछ ऐसे भी मुकाम
वे वेनकाव है, मुँह को हमी छिपाये है

गुलाव आपकी खुशवू भी उनको क्या मिलती
जो अपने पाँव पँखुरियो पे रखके आये हैं

एक अहसास की रगत के सिवा कुछ भी नही
जिदगी ग्रम की हकीकत के सिवा कुछ भी नही

मुस्कुराने को अदा प्यार की समझे है हम
यह मगर आपकी आदत के सिवा कुछ भी नही

उनकी हर बात पे जाती है यहा जान अपनी
लोग कहते है, नजाकत के सिवा कुछ भी नही

क्या नही हाथ म उनके है, पर हमारे लिए
दिल मे हल्की सी हरारत के सिवा कुछ भी नही

जिसको कहते हैं गुलाब आपका दीवानापन
एक रगीन तबीयत के सिवा कुछ भी नही

जो नज़र प्यार की कह गयी है, मुह पे लाने की बाते नही है
हम सुना तो रहे बेसुधी मे, वे सुनाने की बातें नही हैं

हमने माना कि तुम हो हमारे, याद करते रहोगे हमेशा
दूर जाने की बाते हं पर ये, पास आने की बाते नही हं

ज़िंदगी खीचकर हमको लायी किन सुलगती हुई बस्तियो मे
होठ हँस भी रहे हो, मगर अब, मुस्कुराने की बातें नही हैं

या तो हरदम नयी है ये महफिल, हर घडी सुर बदलते हैं इसमे
पर जो हम कह गये आसुओ से, भूल जाने की बातें नहीं हैं

जो गुलाब आपने गीत गाये, उनमे धडकन तो है प्यार की ही
पर वे मजबूरियाँ हैं दिलो की, गुनगुनाने की बाते नही है

झलक रही हैं उन आंखो मे शोखियाँ कैसी
हमारे दिल म तडपती हैं विजलियाँ कैसी

चिराग़ वुझ न गये हा कहो मकानो के
हवा मे तैरती आती हैं सिसकियाँ कैसी

जहाँ से दोस्त कई मुंह फिरा के लौट गये
ये वीच वीच म आती हैं वस्तियाँ कैसी

कोई तो छिपके सितारा से देखता है हमे
खुली हुई हं अँधेरे मे खिडकियाँ कैसी

भले ही वाग मे उनके न खिल सके हं गुलाव
मिली हैं पर ये निगाहो से शोखियाँ कसी

हर सुबह एक ताजा गुलाब
आपकी बेरुखी का जवाब

वह तो हम हैं कि कहते नहीं
कौन पीता है जूठी शराब

कुछ तो मतलब भी समझाइए
खत्म होने को आयी किताब

हमने गजलों में है रख दिया
ज़िंदगी भर का लब्बो लबाब

आप नजरें फिरा लें तो क्या
आपके हो चुके हैं गुलाब

खुलके आओ तो कोई बात बने
रुख मिलाओ तो कोई बात बने

हमने माना कि प्यार है हमसे
मुंह पे लाओ तो कोई बात बने

बात क्या राह मे बनेगी भला
घर पे आओ तो कोई बात बने

रात गीतो की और ऐसे तार
सुर मिलाओ तो कोई बात बने

यो तो बातें बना रहे हैं गुलाब
तुम बनाओ तो कोई बात बने

ज़िंदगी फिर कोई पाते तो और क्या करते
आपसे दिल न लगाते तो और क्या करते

आपके प्यार की पहचान मांगते थे लोग
सर हम अपना न कटाते तो और क्या करते

दिल जो टूटा तो हरेक शहर में ख़ुशबू फैली
फूल भी हम जो खिलाते तो और क्या करते

उनकी नज़रों से छिपाकर उन्हींसे मिलना था
हम ग़ज़ल बनके न आते तो और क्या करते

पखड़ी दिल की कोई चूमने आया था गुलाब
आप नज़रें न झुकाते तो और क्या करते

वहकी हुई है चाल, कोई देखता न हो
ऐसा हमारा हाल, कोई देखता न हो

हम चाहते हैं प्यार तेरा देख ले दुनिया
यह भी है पर खयाल कोई देखता न हो

क्या तू न खुद को भी था दिखाने को बेकरार
तब क्यों है यह सवाल, 'कोई देखता न हो'

दम भर कहीं नज़र जो उलझ ही गयी तो क्या
दिल को ज़रा सँभाल, कोई देखता न हो

क्यों फूल रहा आप ही अपने में तू गुलाब
जब तेरा यह कमाल कोई देखता न हो

यों तो उन नज़रों मे है जो अनकहा, समझे है हम
फिर भी कुछ है इस समझने के सिवा, समझे हैं हम

छोड दी सादी जगह खत मे हमारे नाम पर
बेलिखे ही उसने जो कुछ लिख दिया, समझे हैं हम

प्यार को मज़िल तो है इस बेरुखी से दो कदम
सैकडो कोसो का जिसको फ़ासला समझे हैं हम

आखो-आखो मे इशारा करके आँखे मूद ली
रुकके दम भर पूछ तो लेते कि क्या समझे है हम

देखकर तुझको झुका ली है नज़र उसने गुलाब
हो चुका है खत्म पहला सिलसिला समझे है हम

कहे जो 'हा' तो नही है 'हा' भी, 'नही' कहे तो 'नही' नही है
भले ही आखो से हैं वे ओझल, खनक तो पायल की हर कही है

वे मिल तो लेते है आखो आखो, नही भो दिल म जो कुछ कही है
शराब प्याले मे हो न हो पर, नशा तो पीने मे कम नही है

गये जो आने का वादा करके चले भी आयें कि वक्त कम है
हदें भी हो जिंदगी की आगे, करार मिलने का पर यही है

कसूर है मेरे देखने का, कि है तेरा आइना ही झूठा
कभी जो तू था तो मैं नही था, अभी जो मैं हूँ तो तू नही है

हरेक सुबह आके पोछता है, गुलाब ! कोई तुम्हारे आँसू
भले ही पाँवो का, धूल पर कुछ निशान उसका नही कहीं है

पँखुरियाँ गुलाब की, नम न हो तो क्या करें
कुछ उधर भी प्यार के गम न हो तो क्या करें

कैसे अजनबी बने, हमसे पूछते हैं वे
अब भी तेरी तड़पने कम न हो तो क्या करें

हम इधर हैं बेकरार, है उधर भी इंतजार
पर नज़र के फासले कम न हो तो क्या करें

प्यार यह हमारे ही दिल का हो वहम नहीं
धड़कनों में आपकी, हम न हो तो क्या करें

जब कहा गुलाब को चलके देख लीजिए
बोले, आखिरी है अब, दम न हो तो क्या करें

अपना चेहरा भी किसी और का लगा है मुझे
आज दुश्मन की तरह आइना लगा है मुझे

मैं तेरे प्यार के काबिल तो नही था लेकिन
कुछ तेरे दिल मे धड़कता हुआ लगा है मुझे

एक खुशबू सी खयालो मे बसी रहती है
साथ हरदम है कोई खुशनुमा, लगा है मुझे

यह भी ताकत न रही चार कदम उठके चलू
हाय कब उनकी गली का पता लगा है मुझे

पास आते ही निगाहो मे खिल उठे है गुलाब
फिर कोई अपनी तरफ देखता लगा है मुझे

मुद्दत हुई है आपसे आखें मिले हुए
इन सद घाटियो मे कोई गुल खिले हुए

चमके न बाग मे न किसी हार मे गुंथे
कुछ फूल तो खिलकर भी यहा अनखिले हुए

ऐ आनेवाले कुछ तो उधर की खबर बता
क्यो खत्म दोस्ती के सभी सिलसिले हुए

क्यो दौडती रहती हं निगाहे उसी तरफ
दिलके नही जो तार भी कुछ है मिले हुये

कहने को यो तो और भी कह देते कुछ गुलाब
हैं होठ मगर आज तो उनके सिले हुए

एक अनजान से घेरे मे बद हैं हम लोग
खुद अपने मन के अँधेरे मे बद हैं हम लोग

उदास साझ, हवा सद है, बादल हैं घिरे
और परदेस के डेरे मे बद है हम लोग

उन्हे भी आपकी खुशबू ने छू लिया है गुलाब
जो कह रहे थे कि 'घेरे मे बद है हम लोग'

साज बजता भी है आवाज नही होती है
पर ये चुप्पी भी बिना राज नही होती है

हम उन्हे अपना तडपना भी दिखाये कैसे
दिल जो टूटे भी तो आवाज नही होती है

दिल न कांटो से बिंधा हो तो ग़ज़ल ऐसी गुलाब
लाख कहने का हो अदाज, नही होती है

उनसे इस दिल की मुलाकात अभी आधी है
चाद ढलता हो मगर रात अभी आधी है

ज़िदगी, तेरा इशारा तो समझते है हम
पर तेरे प्यार की सौगात अभी आधी है

कुछ कहे कोई, हमे लौटके आना है यहा
दिल ये कहता है मुलाकात अभी आधी है

यो तो कहती है अदा आपकी सब कुछ हमसे
पर निगाहो मे कोई बात अभी आधी है

हम तो माने जो बरस जायें वे आखे भी गुलाब
तेरे आसू की ये बरसात अभी आधी है

अगर अप दिल से हमारे न होते
तो नजरो से इतन इशारे न होते

नही प्यार होता जो उनको किसीसे
तो आचल मे ये चाँद-तारे न होते

वहुत शोर था उनको दरियादिली का
हम देखकर या किनारे न होते

कहा से गजल प्यार की यह उतरती
जो हम उन निगाहो के मारे न होते

गुलाव आप खिलते जो राहो मे उनकी
तो ऐसे कभी वेसहारे न होते

नही खत्म भी हो सफर चलते चलते
कभी मिल ही लेंगे मगर चलते-चलते

हटा भी लो परदा जरा सामने से
तुम्हे देख लें भर नजर चलते-चलते

अभी तो बहुत दूर थी दिल की मंजिल
रुके क्यो कदम राह पर चलते-चलते

कुछ ऐसी ही थी बेबसी माफ कर दो
हुई चूक कोई अगर चलते चलते

गुलाब उनकी तुमने झलक भी न देखी
सुबह से हुई दोपहर चलते-चलते

खुली-खुली सी खिडकियाँ, लुटी लुटी-सी वस्तिया
वसे थे जो कभी यहाँ, गये वे छोडकर कहाँ !

कहाँ है प्यार की कसम, कहा हो तुम, कहा है हम
ढलान पर कदम-कदम, उतर रहा है कारवा

मिलो न चाहे उम्र भर, मगर हो दिल के हमसफर
जली न आग जो उधर उठा कहाँ से यह धुआँ

कभी जो उनकी एक झलक, नजर से थी गयी छलक
उसी की धुन मे आज तक, फिरे हैं हम जहाँ-तहाँ

गुलाव अव भी डाल पे, भले हो तुम हो खिल रहे
कहाँ हैं सुर वहार के, कहाँ है उनकी शोखियाँ

आदमी भीतर से भी टूटा हुआ लगता है आज
जिंदगी, शीशा तेरा फूटा हुआ लगता है आज

हर नजर खामोश है, हर घर से उठता है धुआं
यह शहर का शहर ही लूटा हुआ लगता है आज

तुझसे आती है किसी जूड़े की तो खुशबू गुलाब
हाथ से दामन मगर छूटा हुआ लगता है आज

हम खोज मे उनको रहते है, वे हमसे किनारा करते है
फूलों मे हँसा करते हैं कभी, पत्तों मे इशारा करते है

बिछुडे हुये राही मिल न सके, आखिर हम भीड मे खो ही गये
दिल उनका पुकारा करता है, हम दिल को पुकारा करते है

बिस्तर पे सिकदर को देखा मरते तो कोई यो बोल उठा
दुनिया को हराने वाले भी तकदीर से हारा करते है

इस दौर का हर पीनेवाला फिरता है तलाश मे प्याले की
एक हम हैं कि प्याला हाथ म ले, खुद को ही पुकारा करते है

काटो की चुभन मे भी हरदम देखा है गुलाब को हँसते ही
समझा भी कोई किस हाल मे वे दिन अपने गुजारा करते हैं।

तेरा दर छोडके जाने का कभी नाम न लूं
यो पिला दे कि कही और सुवह्-शाम न लूं

मुझको नस-नस के चटकने का हो रहा है गुमान
हुक्म तेरा है कि दम भर कही आराम न लू

यो न लहरा दे मेरे सामने आँचल अपना
मैं हूँ मदहोश कही वढके इसे थाम न लूं

वे मेरे प्यार की धडकन तो समझते हैं जरूर
मैं भले ही कभी होठो पे उनका नाम न लू

यह तो वतला कि खिलायें हैं भला क्यो ये गुलाव
है अगर जिद ये तेरी, इनसे कोई काम न लू

यादों के इस सफर में है फिर गुलाब फूले
फिर बेकली है सर में, है फिर गुलाब फूले

उड़कर कहीं से चंदी खुशबू-सी आ रही है
क्या आपकी नजर में हैं फिर गुलाब फूले

हर फूल में उन्हींकी रंगत मिली है हमको
जैसे कि बाग भर में है फिर गुलाब फूले

दिल लौटता रहा है टकरा के हर नजर से
पत्थर बने शहर में हैं फिर गुलाब फूले

बेकार लिख गये हैं खत में हम उनको इतना
लिखना था मुख्तसर में, हैं फिर गुलाब फूले'

कभी पास आ रही है, कभी दूर जा रही है
ये नज़र है प्यार की जो मुझे आजमा रही है

ये घुटा घुटा सा मौसम, ये रुकी रुकी हवायें
मेरे पास बैठ जाओ, मुझे नींद आ रही है

कभी बाग में खिलेंगे, जो गुलाब भी हज़ारों
ये महक कहां मिलेगी जो गज़ल में छा रही है

जुही में फूल जब आये, हमें भी याद कर लेना
नज़र जब खुद से शरमाये, हमें भी याद कर लेना

मुसाफिर राह में या तो हजारों साथ चलते हैं
कोई जब दिल को छू जाये, हमें भी याद कर लेना

न होता दिल हमारा तो निशाना तुम किसे करते
हमींने तीर चलवाये, हमें भी याद कर लेना

कभी आंखों ही आंखों बात कुछ हमसे भी होती थी
कभी हम भी तुम्हें भाये, हमें भी याद कर लेना

तुम्हारे प्यार की धुन में खिला तो सौ गुलाब आये
भले ही हम न खिल पाये, हमें भी याद कर लेना

ऐसी बहार फिर नही आयेगी मेरे वाद
कोयल भले ही कूक सुनायेगी मेरे वाद

कुछ तो रहेगा दिल मे कसकता हुआ जरूर
माना कि मेरी याद न आयेगी मेरे वाद

मुझसे मिला था रूप की चितवन को वाकपन
दुनिया किसे ये रग दिखायेगी मेरे वाद।

यह वेवसी की रात, ये वेचैनियाँ, ये गम
यह प्यार की जलन कहा जायेगी मेरे वाद।

आखे उठाके आज न देखो गुलाव को
खुशवू मगर न दूसरी आयेगी मेरे वाद

जो हमें कहते थे हरदम 'जान से तुम कम नही'
जान जाने का हमारी आज उनको गम नही

आँखो-ही आखो लिपट जाते गले से आपके
आप अब आये है जब इतना भी दम मे दम नही

हमने कागज़ पर उतारी हैं अदायें आपकी
चितवनो की शोखियाँ होगी कभी ये कम नही

आपकी नज़रो मे माना, हैं वही मस्ती के रग
पर जो दीवाना बना दे दिल को, वह मौसम नही

बन के खुशबू बाग की हद से नकल आये गुलाब
लाख अब कोई मिटाये, मिट सकेंगे हम नही

वरखी तो मेरे सरताज नही होती हे
पर वा पहले सी नजर आज नही हाती है

रूप मुंहताज है वदो की नजर का लेकिन
वदगी रूप की मुंहताज नही होती है

सर पे काटे भी वडे शौक से रखते है गुलाव
तख्तपोशी तो विना ताज नही होती है

आज हो चाहे दूर भी जाना, मेरे साथी, मेरे मीत
लौटके फिर इस राह से आना, मेरे साथी, मेरे मीत

कठपुतली का खेल दिखाने कोई हम लाया था यहां
प्यार तो बस था एक बहाना, मेरे साथी, मेरे मीत

झांझर नैया, डांडे टूटी, नागिन लहरें, तेज हवा
टिक न सकेगा पाल पुराना, मेरे साथी, मेरे मीत

यों तो हरेक झोंके से हवा के, प्यार की खुशबू आती थी
दिल ने तुम्हीं को एक था माना, मेरे साथी, मेरे मीत

मिल भी गये फिर आते-जाते, मिलके निगाहें फेर भी लो
गंध गुलाब की भूल न जाना, मेरे साथी, मेरे मीत